BA-II (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - चारि

प्रो० रंजीत कुमार राम
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

सुन्दर-संयोग नाटक

सुन्दर संयोग नाटकक रचनाकार छथि कविवर जीवनझा। ई नाटकमे विवाहोपरान्त नव-विवाहित दम्पतिक प्रेम, मिलन ओ विरहक कथा चित्रित कएल गेल अछि। मुख्य ई नाटक पात्र मुख्य अछि - सुन्दर, सरला, कादम्बरी, हरदत्त गिरिधर, सरस्वती। सुन्दर मिश्र संस्कृत शिक्षा प्राप्त शालीनताँ सम्पन्न एक सज्जन युवक छथि, जे अपन विवाहक चतुर्थीक राति पत्नी सरलाकेँ छोड़ि पुरश्चरण करय वैद्यनाथधाम चलि जाइत अछि। वैद्यनाथधामक अपन आवास यथा संभव शुद्ध स्वभाव तथा कैल छथि। एहि स्थितिमे सरला ने कुमारिए छथि आ ने पत्यन्तः संधवे। वास्तवमे सरला

सरला सधवा रहितहुँ वैधव्य वेदना सहैत रहलीह। सुन्दर हरद्वार पण्डाक ओतय रहि डेढ़ साल धरि पुरश्चरण करैत छथि। कालक्रमे सरला सेहो अपन गाम माय सरस्वती, मामा गिरिधर झा, मामी अभिरानी सँ भेंट कैलन्हि। बहिन कादम्बरीक संग शिवरात्रिक अवसर पर वैद्यनाथधाममे आबैत छथि। संयोगसँ ओहि पण्डाक ओहिठाम सुन्दर रहैत छलाह। ताहि ठाम ईहो लोकनि अबैत छथि। सुन्दर चतुर्थिक दिन सासुर धरि देखाक कारणे अपन पत्नी पर्यन्तक नीक जकाँ नहि देखने रहथि तखन सालि सबके नहि चिन्हब उचित। ओहिना प्रारम्भमे अपन सासुरक लोक सबसँ सुन्दर अनचिन्हार रहलाह, परन्तु पण्डाक परिवार द्वारा कहल गेला पर जे हिनक गाम देवनगर छियनि, बाप मरि गेल छथिन, माय छथि। द्विरागमनो नहि एखन धरि भेल छनि, ताहि विषय तथा कादम्बरी द्वारा सुन्दर रूप गुण सबसँ सरलाक पतिक रूपमे शंका प्रकट करब आ सबसँ विशेष मौखिक रहबाक कारणे ओहि परिवारक संग सुन्दरक आकर्षण बढ़ैत गेल। परन्तु हिनकर लोकनिक परिचय संदेहास्पद रहल।

(3)

शिवरात्रीक अवसर पर वैद्यनाथ मन्दिरमे शीहक कल्पना कय सरला जोतिर्लिंग दर्शन करबाक भार सुन्दर पर पड़ल। सरला मंदिरमे मूर्तिकेँ कोशित रहैत छथि आ सुन्दर हिनका उपाय प्रार्थना करैत छथिन। सरस्वती बाबाक दर्शन करबाकाल प्रार्थना करैत रहैत छथिन - हे वैद्यनाथबाबा। जे-जे कहल छल, सब मनोरथ पुरल। दोसर दिस, सरस्वतीक मनोभाव आओर पल्लवित भऽ रहल छल। जखन अपीच्छित कुमारी अपन जमाय सुन्दरसँ कहैत छथि - हे बाबा हमरा पुण्य रहैत ते सुन्दर ई वयस भेलैक जमाय - चतुर्थी आदिक दिन एकरा कुशलि कोठीकेँ जे गेलाह। से आई धरि उद्देश्य नहि पूरो छलन्हि। जखन पण्डित संकेत करैत कहैत छथिन - जे - पण्डित बाबू (सुन्दर) सरलाक वर सिद्धाह। से सरला प्रति हिनक स्नेह, पलिक प्रति आकर्षण सुन्दरक हृदयमे सब दिन विद्यमान रहल।

[illegible]
[illegible]/05